राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

उत्तराखण्ड राज्य के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों हेतु

उच्च शिक्षा के प्रथम तीन वर्षों के लिए साझा न्यूनतम पाठ्यक्रम

स्नातक- संस्कृत पाठ्यक्रम

राजकीय महाविद्यालय बनबसा, चम्पावत उत्तराखण्ड - 262310

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप

स्नातक- संस्कृत पाठ्यक्रम

संस्कृत पाठ्यक्रम की प्रस्तावना-

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतम् संस्कृतिस्तथा
उभयमपि परिरक्ष्यम् संस्कृतम् संस्कृतिश्च

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है, जिसे देववाणी (देवताओं की भाषा) भी कहा जाता है। यह न केवल भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का आधार है, बल्कि विश्व साहित्य, दर्शन, विज्ञान और गणित के क्षेत्र में भी इसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। संस्कृत में रचित वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, योगसूत्र, आयुर्वेद तथा अन्य ग्रंथों ने मानव सभ्यता को अमूल्य ज्ञान दिया है।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के मूलभूत ज्ञान से परिचित कराना, उन्हें शुद्ध उच्चारण, व्याकरण, शब्द भंडार तथा अनुवाद कौशल में दक्ष बनाना है। साथ ही, पाठ्यक्रम में श्लोकों, सूक्तियों, और लघु कथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, चिंतनशीलता और भाषिक सौंदर्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना भी एक प्रमुख लक्ष्य है।

यह पाठ्यक्रम विभिन्न स्तरों पर छात्रों की भाषा-शक्ति को क्रमशः विकसित करता है – जिससे वे संस्कृत ग्रंथों को समझने, उनका विश्लेषण करने तथा अपने विचारों को संस्कृत में अभिव्यक्त करने में सक्षम हो सकें। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम न केवल भाषायी शिक्षा है, बल्कि व्यक्तित्व-विकास की दिशा में भी एक सशक्त प्रयास है।

संस्कृत भाषा सर्वज्ञानमय है संस्कृत भाषा को उत्तराखण्ड की द्वितीय राजभाषा का सम्मान प्राप्त है इसके सम्बर्धन एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में सरकार द्वारा किया जा रहा प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। सस्कृत भाषा को सर्वजनस्पर्शी बनाने हेतु संस्कृत सम्भाषण परम आवश्यक है। इसे संस्कृत भाषा जन-जन की व्यवहारिक भाषा बन सकेगी तथा संस्कृत भाषा में निबद्ध ज्ञान सबके लिए ग्राह्य हो सकेगा।

संस्कृतम् अध्ययनं न केवलं भाषायाः शिक्षणं, अपि तु सांस्कृतिकस्य बोधस्य च मार्गः अस्ति।
(संस्कृत का अध्ययन केवल भाषा की शिक्षा नहीं, बल्कि संस्कृति की समझ का मार्ग भी है।)

(उत्तराखंड राज्य के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार स्नातक पाठ्यक्रम)

स्नातक प्रथम वर्ष (कला में प्रमाणपत्र - संस्कृत)

वर्ष	सत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	पद्धति	क्रेडिट
प्रथम	I	संस्कृत नीतिकाव्य एवं व्याकरण (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6
	I/II	संस्कृत भाषा अध्ययन (वैकल्पिक/माइनर)	सैद्धांतिक	4
	II	संस्कृतमहाकाव्य, छन्दोऽलंकार एवं नाटक (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6

स्नातक द्वितीय वर्ष (कला में डिप्लोमा - संस्कृत)

वर्ष	सत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	पद्धति	क्रेडिट
द्वितीय	III	संस्कृत महाकाव्य, भारतीय संस्कृति एवं व्याकरण (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6
	III/IV	श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन (वैकल्पिक/माइनर)	सैद्धांतिक	4
	IV	संस्कृत साहित्य, साहित्यकार परिचय एवं निबन्ध (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	6

स्नातक तृतीय वर्ष (कला स्नातक - संस्कृत)

वर्ष	सत्र	प्रश्नपत्र शीर्षक	पद्धति	क्रेडिट
तृतीय	V	साहित्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
	V	उपनिषद्, पुराण एवं स्तोत्र काव्य (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
	V	लघुशोध अध्ययन एवं कार्य - संस्कृत रूपकों में नाट्यशास्त्रीय तत्त्व (परियोजना)	परियोजना	4
	VI	वैदिक वाङ्मय (वेद एवं वैदिक साहित्य) (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
	VI	धर्म शास्त्र स्मृति एवं कौटिलीय अर्थशास्त्र (मुख्य/कोर)	सैद्धांतिक	5
	VI	लघुशोध अध्ययन एवं कार्य - वेद में योग का स्वरूप (परियोजना)	परियोजना	4

स्नातक- संस्कृत पाठ्यक्रम के उद्देश्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Outcomes - COs): संस्कृत विषय के अध्ययन उपरान्त शिक्षार्थीः

- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर नीतिकाव्य से परिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत नीतिकाव्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- नीतिकाव्य में प्रयुक्त नैतिक शिक्षा का बोध कर सकेंगे।
- संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा।
- स्वर एवं व्यंजन के मूल भेद को समझ कर पृथक् अर्थावगमन की क्षमता उत्पन्न होगी।
- स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।
- संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत महाकाव्य के अध्ययन से उनमें निहित महान् चरित्रों का अध्ययन कर आत्मसात् करेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत महाकाव्य प्रयुक्त रस, छन्द, अलंकारों को समझने की क्षमता प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत महाकाव्यों में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से विद्यार्थियों का नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होंगा।
- संस्कृत नाटक के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृत नाट्य साहित्य को सामान्य रूप से समझने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- संस्कृत महाकाव्य के अध्ययन से उनमें निहित महान् चरित्रों का अध्ययन कर आत्मसात् करेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत महाकाव्य प्रयुक्त रस, छन्द, अलंकारों को समझने की क्षमता प्राप्त करेंगे।
- संस्कृत महाकाव्यों में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से विद्यार्थियों का नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होंगा।
- संस्कृत नाटक के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृत नाट्य साहित्य को सामान्य रूप से समझने में सक्षम होंगे।

- नाटक की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगे तथा संवाद एवं अभिनय कौशल में पारंगत होंगे।
- सस्कृत भाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
- संस्कृतभाषा को स्नातक-कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
- संस्कृत भाषा के ज्ञान से नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक मूल्यों को समझ कर अपना लक्ष्य पूर्ण कर सकते हैं।
- संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।
- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य रचनाओं से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य रचनाओं से परिचित हो सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृति की विशेषताओं से परिचित होंगे जिससे उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होंगा।
- भारतीय सास्कृतिक तत्त्वों एवं मूल्यों को आत्मसात् कर भारतीयता के गर्व बोध से युक्त उत्तम नागरिक बनेगें।
- विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर पद्यसाहित्य एवं गद्यसाहित्य से सुपरिचित हो सकेंगे।
- सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से पद्यसाहित्य की सुगीतात्मकता का सौन्दर्य बोध कर सकेंगे।
- सम्बन्धित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होंगा।
- प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत साहित्यकारों के अध्ययन से प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में निबन्ध एवं अनुच्छेद लेखन क्षमता को विकास होंगा।
- विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय से अवगत हो सकेंगे।
- श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से कर्मसिद्धान्त एवं अध्यात्मज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- मानवजीवन में ज्ञान के महत्त्व को आत्मसात करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी प्रबन्धन के क्षेत्र में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

- विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्य शास्त्रीय तत्वों को समझने में सक्षम होंगे।
- भारतीय दार्शनिक तत्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
- दार्शनिक तत्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।
- व्याकरणशास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेंगा।
- .उपनिषद् का सामान्य परिचय एवं निहित उपदेशों का अवबोध होगा।
- . पुराणों के अध्ययन से सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना से परिचित होंगे।
- स्तोत्र काव्य के अध्ययन से कल्याण परक तथ्यों से परिचित होकर आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।
- स्तोत्र काव्य के रहस्य द्वारा सृष्टि कल्याणार्थ भाव विकसित होंगे।
- विद्यार्थी वैदिक वाङ्गमय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीयकरण होगा।
- वैदिक सूक्तों के माध्यम से विद्यार्थी को तत्कालीन आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य का निदर्शन होगा।
- वर्तमान समय में वेदांग के ज्ञान द्वारा मानव कल्याणार्थ अग्रसर होंगे।
- स्मृति साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- मनुस्मृति के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं संस्कार का अवबोध कर सकेंगे।
- याज्ञवल्क्य स्मृति के अध्ययन से आचार एवं व्यवहार का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- कौटिल्य अर्थशास्त्र के अध्ययन से अर्थनीति एवं राजनीति के मूलभूत सिद्धान्तों का अवबोध कर सकेंगे।

परियोजना:

परियोजना- संस्कृत रूपकों एवं नाट्यशास्त्रीय तत्त्व इस परियोजना कार्य के उपरान्त शिक्षार्थीः

परियोजना कार्य के उपरान्त शिक्षार्थीः

1. नाट्यशास्त्र का परिचय, नाट्यशास्त्र के तत्त्वों का सामान्य परिचय, रूपकों में नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों का अन्वेषण एवं महत्त्व से परिचित होंगे।
2. लघु शोधात्मक अध्ययन एवं कार्य के माध्यम से संस्कृत रूपकों एवं नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी रूपकों के अध्ययन के माध्यम से शोध कार्य में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।
4. संस्कृत साहित्य के प्रसार के लिए नाट्यशास्त्रीय अध्ययन सहायक होगा।

परियोजना- वेद में योग का स्वरूप (Project: Ved mein Yog ka Swaroop) इस परियोजना कार्य के उपरान्त शिक्षार्थीः

1. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, उपनिषद् एवं श्रीमद्भगवत गीता के सन्दर्भ में शोध के माध्यम से वेद एवं योगशास्त्र से परिचित होंगे।
2. भारतीय योग शास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों को जानकर योग की महत्ता से परिचित होंगे।
3. योग के वास्तविक स्वरूप के अवबोध द्वारा योग को जीवन में समाहित करने हेतु प्रेरित होंगे जिसके अनुप्रयोग से स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकने में समर्थ होंगे।

वैदिक अध्ययन : अधिगम उपलब्धि

वेद शब्द का अर्थ ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह ग्रन्थ है। प्राचीन ऋषियों ने जो ज्ञान अर्जित किया था, उसका संग्रह वेदों में है। वेद अपौरुषेय एवं आप्तवचन हैं। इनमें प्रतिपादित धर्म और ज्ञान शब्द-प्रमाण हैं। प्रत्यक्ष और अनुमान से जिन बातों का ज्ञान नहीं हो सकता, उनका बोध वेदों से ही होता है। विद्यार्थियों को वैदिक अध्ययन के अन्तर्गत वेद परिचय, वैदिक साहित्य, वेदाङ्ग, वैदिक मन्त्र, देवता, सूक्तों एवं कल्पसूत्रों में निहित समग्र ज्ञान राशि का अवबोध एवं यथार्थ ज्ञान से आत्मगौरव का अनुभव होगा। विद्यार्थियों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए एवं भारतीय ज्ञान परम्परा को अग्रसारित करने हेतु सहायक होगा।

संस्कृत शिक्षण-परिणाम (Sanskrit Learning Outcomes)

- भारतीय समाज के पारंपरिक मूल्यों (वर्णाश्रम, धर्म, कुटुंब व्यवस्था) को गहराई से समझ सकेंगे।
- संस्कृत ग्रंथों से सामाजिक संस्थाओं और उनके विकास का अध्ययन कर सकेंगे।
- संस्कृत भाषा में संवाद, अनुवाद, एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति में दक्ष हो सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य को मल्टीडिसिप्लिनरी विषयों (जैसे समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शन) के साथ एकीकृत कर अध्ययन

  करने में दक्ष होंगे।
- अंतरराष्ट्रीय संस्कृत शिक्षण/भारतीय संस्कृति केन्द्रों में काम करने के अवसर प्राप्त होंगे।
- छात्र समाज की भारतीय परंपराओं में व्याख्या को समझ सकेंगे।
- समाज की वर्णाश्रम जैसी संस्थाओं के आधारभूत तथ्यों से भली भांति परिचित हो सकेंगे।

रोज़गार और कैरियर की संभावनाएँ (Expanded Career Opportunities)

क्षेत्र	संभावित पद / कार्य
शिक्षा क्षेत्र	संस्कृत शिक्षक/प्राध्यापक (स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय), पाठ्यक्रम विशेषज्ञ
शोध व अकादमिक क्षेत्र	अनुसंधानकर्ता (सामाजिक अध्ययन, संस्कृति, तुलनात्मक साहित्य), पीएच.डी. में शोध
विरासत और संस्कृति संरक्षण	पुरातत्व विभाग, संग्रहालय क्यूरेटर, सांस्कृतिक अनुवादक
मीडिया और पत्रकारिता	संस्कृत कंटेंट लेखक, संपादक, संस्कृत न्यूज एंकर,
विधि और नीति निर्माण	भारतीय संविधान और धर्मशास्त्र के तुलनात्मक अध्ययनकर्ता, नीति विश्लेषक
आध्यात्मिक और योग क्षेत्र	वेद-उपनिषद् शिक्षक, योग संस्थानों में वेद/संस्कृत विशेषज्ञ
पर्यावरण और सामाजिक कार्य	परंपरागत पर्यावरण दर्शन पर काम करने वाले एनजीओ, ग्राम विकास
धार्मिक एवं संस्कृत प्रशिक्षण संस्थान	पुरोहित प्रशिक्षण, कर्मकाण्ड विशेषज्ञ, संस्कृत भाषाशिक्षक
स्वतंत्र रचनात्मक कार्य	पुस्तक लेखन, संस्कृत कविता/नाटक लेखन, अनुवादक (संस्कृत से हिंदी/अंग्रेज़ी)
आईसीटी व टेक आधारित क्षेत्र	संस्कृत टूल्स/एप्स का निर्माण, भाषा तकनीकी कार्य, डिजिटल कंटेंट क्रिएटर